अध्याय 1 भाग–3

संविधान एक जीवंत दस्तावेज़

– संविधान समाज की इच्छाओं और आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब होता है। यह एक लिखित दस्तावैज है जिसे समाज के प्रतिनिधि तैयार करते है। संविधान का अंगीकरण 26 नवम्बर 1949 को हुआ और इसे 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया।

संविधान में जीवंतता है क्योंकि –

Read and write main points in your notebook.

1. यह परिवर्तनशील है।
2. यह स्थायी या गतिहीन नहीं।
3. समय की आवश्यकता के अनुसार इसके प्रावधानों को संशोधित किया जाता है।
4. संशोधनों के पीछे राजीनीतिक सोच प्रमुख नहीं बल्कि समय की जरूरत प्रमुख हैं।

संविधान में संशोधन–

1. संशोधन की प्रक्रिया केवल संसद से ही शुरू होती है।
2. संशोधन की प्रक्रिया अनुच्छेद 368 में है।
3. संशोधनों का अर्थ यह नहीं कि संविधान की मूल सरंचना परिवर्तित हो।
4. संशोधनों के मामलें में भारतीय संविधान लचीलेपन व कठोरता का सिश्रण।
5. 1950 में संविधान के लागू होने से अब तक लगभग 103 संशोधन किये जा चुके हैं। इसके लिए 124 संविधान संशोधन विधेयक पारित हुए है 124 वॉ संविधान संशोधन बिल के अनुसार सामान्य वर्ग के आर्थिक रुप से कमजोर वर्ग के लोगो को 10% आरक्षाण देने का प्रावधान है।
6. संविधान संशोधन विधेयक के मामलें में राष्ट्रपति को पुर्नविचार के लिए भेजने का अधिकार नहीं है।

संशोधन में संशोधन के तरीके

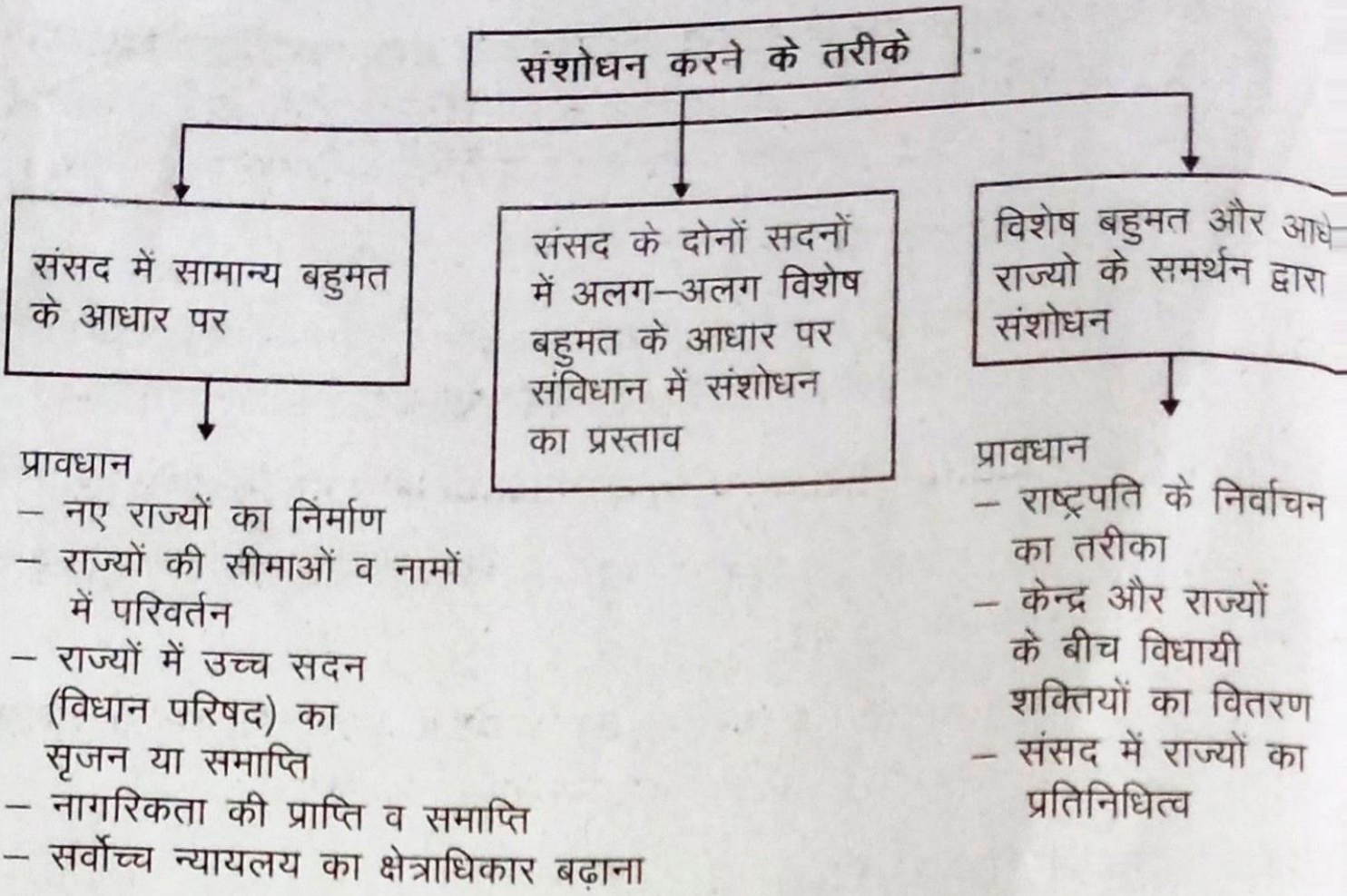

संविधान में इतने संशोधन क्यों?

– हमारा संविधान द्वितीय महायुद्ध के बाद बना था उस समय की स्थितियों में यह सुचारू रूप से काम कर रहा था पर जब स्थिति में बदलाव आता गया तो संविधान को सजीव यन्त्र के रूप में बनाए रखने के लिए संशोधन किए गए। इतने (लगभग 103) अधिक संशोधन हमारे संविधान में समय की आवश्यकतानुसार लोकतंत्र को सुचारू रूप से चलाने के लिए किए गए।

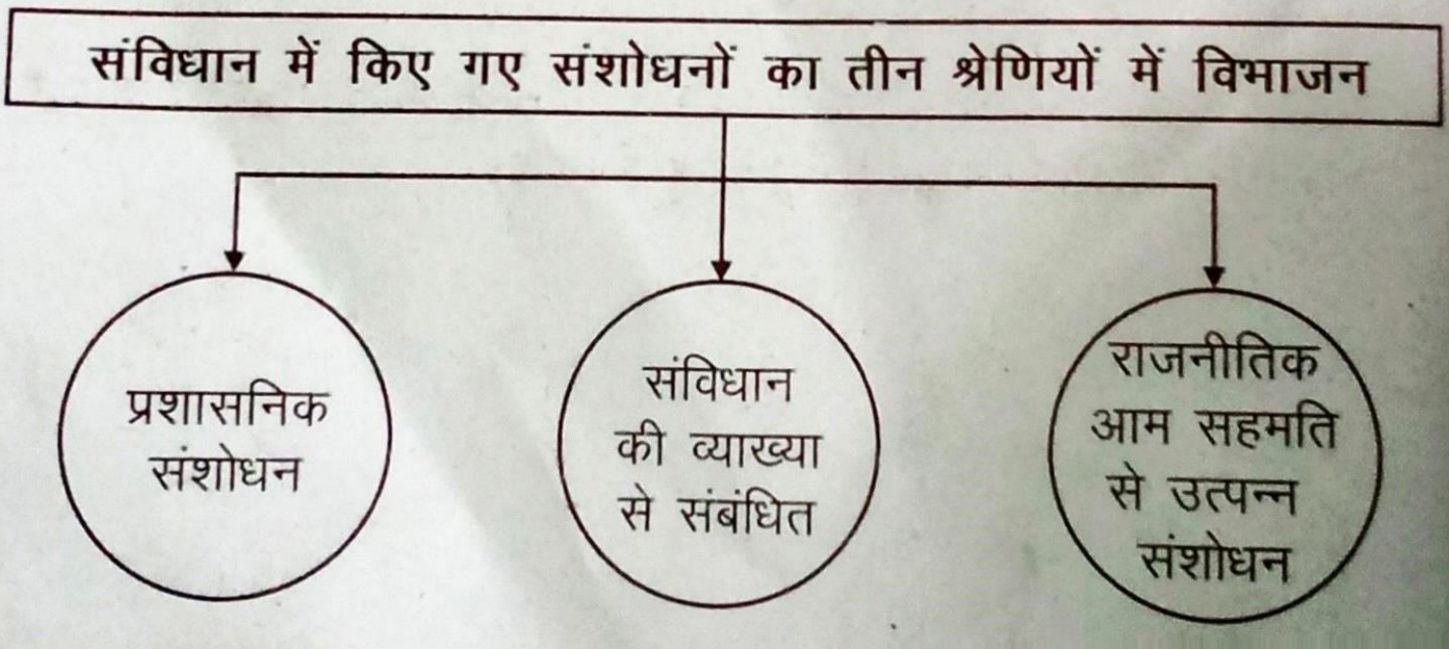

विवादास्पद संशोधन–

– वे संशोधन जिनके कारण विवाद हो। संशोधन 38वां, 39वां 42वां विवादस्पद संशोधन माने जाते है। ये आपातकाल में हुए संशोधन इसी श्रेणी में आते हैं। विपक्षी सांसद जेलों में थे और सरकार को असीमित अधिकार मिल गए थे।

संविधान की मूल संरचना का सिद्धान्त–

– यह सिद्धान्त सर्वोच्च न्यायालय ने केशवानंद भारती मामले में 1973 में दिया था। इस निर्णय ने संविधान के विकास में निम्नलिखित सहयोग दिया–

1. संविधान में संशोधन करने की शक्तियों की सीमा निर्धारित हुई।
2. यह संविधान के विभिन्न भागों के संशोधन की अनुमति देता है पर सीमाओं के अंदर।
3. संविधान की मूल सरंचना का उल्लंघन करने वाले किसी संशोधन के बारे में न्यायपालिका का फैसला अंतिम होगा।

संविधान एक जीवंत दस्तावेज–

– संविधान एक गतिशील दस्तावेज है।

– भारतीय संविधान का अस्तित्व 69 वर्षों से है इस बीच यह संविधान अनेक तनावों से गुजरा है। भारत में इतने परिवर्तनों के बाद भी यह संविधान अपनी गतिशीलता और बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार सामंजस्य के साथ कार्य कर रहा है।

– परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तनशील रह कर नई चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करते हुए भारत का संविधान खरा उतरता है यहीं उसकी जीवतंता का प्रमाण है।

– समयानुसार परिस्थितियों के बदलनें पर संविधान में परिवर्तन किये जाते है, जो किसी जीवंत दस्तावेज मे ही मुमकिन है।

Class -11

Date-28-7-2020

Home Assignment

Subject – Business Studies

Unit-3 Public and Private enterprises

Learn difference between public and private enterprises.

Subject- Economics

Chapter-8 concept of Cost

Make notes on Total cost, variable cost and difference between TC and VC in your fair notebook

Subject – Accountancy

Chapter-11 Cash Book

Read meaning, features, steps to prepare cash book

M.D. SENIOR SECONDRY SCHOOL-MANKROLA(GRG)

HOMEWORK FILE

CLASS-XI

SUBJECT-ENGLISH

DATED-28-07-20.

1. Complete the questions-answer of the lesson-
   We are not afraid to die, if we all be together.
2. Learn all the question. And try to write them in your own way and do practice in rough copy.

Class11th Hindi 28/7/2020

6

स्पीति में बारिश

(कृष्णनाथ)

Writer and learn it.

लेखक-परिचय

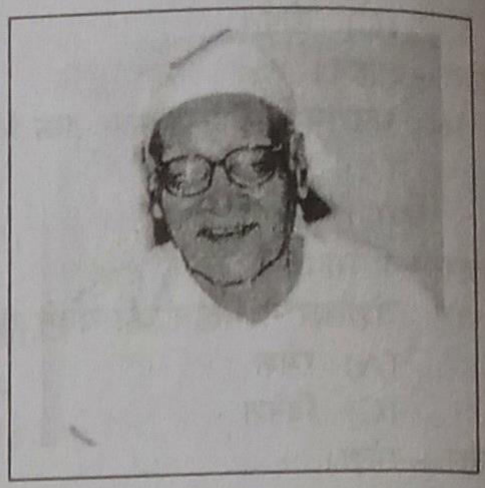

जीवन परिचय—कृष्णनाथ का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी नगर में सन् 1934 ई० में हुआ था। इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम० ए० की उपाधि प्राप्त की थी। इन्होंने काशी विद्यापीठ में अर्थशास्त्र के प्रोफैसर के पद पर कार्य किया था। इन्होंने कुछ वर्षों तक अंग्रेज़ी पत्रिका 'मैनकाइंड' का संपादन किया था। ये हिंदी की साहित्यिक पत्रिका 'कल्पना' के संपादक मंडल में भी कई वर्षों तक रहे। इन का झुकाव समाजवादी आंदोलन की ओर था। इन्होंने राममनोहर लोहिया तथा जय प्रकाश नारायण के साथ विभिन्न आंदोलनों में भी भाग लिया था। इन्होंने बौद्ध-दर्शन का भी विशेष अध्ययन किया है। इन्हें लोहिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

रचनाएँ—कृष्णनाथ का हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाओं पर समान अधिकार रहा है। इन्होंने इन दोनों ही भाषाओं में अपनी साहित्य-साधना की है। इनकी प्रमुख रचनाएँ अरुणाचल यात्रा, लद्दाख में राग-विराग, किन्नर धर्मलोक, स्पीति में बारिश, पृथ्वी परिक्रमा, हिमालय यात्रा तथा बौद्ध निबंधावली हैं। इन्होंने कई पुस्तकों का संपादन भी किया है।

भाषा-शैली—कृष्णनाथ की भाषा तत्सम प्रधान तथा शैली वर्णन प्रधान है। 'स्पीति में बारिश' पाठ में भी लेखक ने योग, आकस्मिक, अलंघ्य, अवज्ञा, अप्रतिकार, निर्वाण, अतर्क्य आदि तत्सम शब्दों का बहुत प्रयोग किया है। कहीं-कहीं दर्रा, डाइनामाइट, वायरलेस, सुपरिंटेंडेंट, असिस्टेंट, फ़ौजदारी, मुकद्दमा, स्केटिंग, आदि लोक प्रचलित विदेशी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है, जिससे भाषा के प्रवाह में कोई बाधा नहीं आती है। इनकी शैली में काव्यात्मकता का गुण भी विद्यमान है, जैसे—'ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं। युवक-युवतियाँ किलोल करें तो यह भी हर्षित हों।' इनकी शैली में विवरणों की प्रधानता है, जैसे—'स्पीति में वसंत लाहुल से भी कम दिनों का होता है। वसंत में भी यहाँ फूल नहीं खिलते, न हरियाली आती है, न वह गंध होती है।' कुछ स्थलों पर चित्रात्मकता का गुण भी देखा जा सकता है, जैसे—'स्पीति में कभी-कभी बारिश होती है। वर्षा ऋतु यहाँ मन की साध पूरी नहीं करती। धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है।'

इस प्रकार कृष्णनाथ ने विषयानुकूल तत्सम प्रधान भाषा एवं प्रवाहमयी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते हुए अपने भावों को कुशलतापूर्वक व्यक्त किया है।

Class:-11th Date:- 28 July, 2020

Subject:- Geography Home Work

Revise Part-1

Ch:-3 Interior of the earth (Part-1)

पृथ्वी की आंतरिक संरचना

Learn/write , Long Answer Type Questions in f/c notebook.

Subject:- Physical education

Read ch:3 Olympic Movement

L/W Long Answer Type Questions (7,8) in f/C notebook.